Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

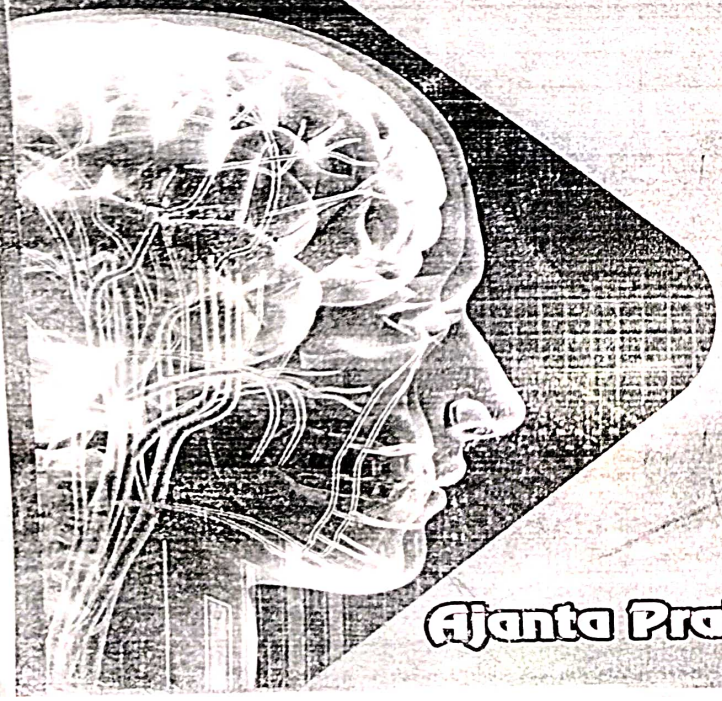

Volume-VIII, Issue-II
April - June - 2019
Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

५. आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पुरुषार्थ चतुष्टय

डॉ. ऋतु मिश्रा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, डी. बी. एस. महाविद्यालय, कानपुर ।

जीवन में आकर्षण और विरक्ति दोनों है। भौतिक सुख जीवन में आकर्षण तो उत्पन्न करते हैं किन्तु उनकी प्राप्ति की कामना से उत्पन्न सङ्घर्ष और प्राप्ति के उपरान्त भी इन भौतिक सुखों से मिलने वाले आनन्द की अल्पायु मनुष्य को विरक्ति की ओर ले ही जाती है। मानवीय अन्तःकरण में उत्पन्न होने वाली कामनायें प्रथमतः तो सरलता से पूर्ण होती नहीं और यदि पूर्ण हो भी जायें तो एक कामना का अन्त नवीन कामना को जन्म दे देता है। कामनाओं की निरन्तर पूर्ति के चक्र में फँसकर मनुष्य की शान्ति नष्ट हो जाती है। स्थिति जो भी हो, जीवन जीने के लिये है, पलायन का यहाँ कोई स्थान नहीं। जीवन को ऐश्वर्य के साथ जीना चाहिये और अपने शाश्वत कल्याण की व्यवस्था भी करनी चाहिये। इस विचार को हमारे ऋषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व दृढ़ता से प्रतिपादित किया और प्रत्येक मनुष्य को जीवन में चार पुरुषार्थों के पालन का निर्देश दिया। ये चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। यथार्थ में यह जीवन—विकास के चार साधन और लौकिक तथा पारलौकिक जीवन के सुखों का वास्तविक मूल हैं।

प्रथम पुरुषार्थ : 'धर्म'

यहाँ 'धर्म' प्रथम पुरुषार्थ है। धर्म धारण करने के लिये है। ऐसा व्यवहार जो कि लौकिक अभ्युदय के साथ पारलौकिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे 'धर्म' है। हमारी षाष्वत परम्परा 'धर्म' के लक्षणों का भी उल्लेख करती है।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम् शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

धर्म के यह दस लक्षण 'धर्म' के वास्तविक अर्थ को प्रकट करते हैं जो कि मानव—चरित्र के दस उदात्त लक्षण हैं। चरित्र में इन दस लक्षणों की उपस्थिति मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाने का सहज मार्ग है। यहाँ 'धर्म' प्रथम पुरुषार्थ इसलिये भी है क्योंकि 'धर्म' ही 'अर्थ' और 'काम' को उचित दिशा देकर 'मोक्ष' का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारी सनातन परम्परा में 'धर्म' उपासना—पद्धति का पर्याय नहीं है लेकिन जब यह उपासना से जुड़ा तब आस्था और विश्वास का जन्म हुआ। ऐसी आस्था, ऐसा विश्वास जिसने पाषाण में कल्याणमय शिव के साक्षात् दर्शन किये और यह आस्था भारतीय जनमानस में इतनी अधिक गहरायी से समाविष्ट हुयी कि प्रकृति के हर चेतन और अचेतन में ईश्वरीय अंश की सहज उपस्थिति मान ली गयी। इतना ही नहीं यहाँ अपनी इच्छानुसार ईश्वर के स्वरूप की कल्पना तथा उसकी उपासना की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रत्येक स्त्री—पुरुष को प्रदान कर दी गयी। हमारी सनातन संस्कृति ने उपासना के सम्बन्ध में न तो किसी एक ईश्वर को मानने का प्रतिबन्ध लगाया और न ही प्रक्रिया—विशेष हेतु जनसाधारण को बाध्य किया। किसी